National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-08-2020; Accepted: 23-08-2020; Published: 09-09-2020
www.nationaljournals.com
Volume 5; Issue 3; 2020; Page No. 09-12

धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन में राजाराम मोहन राय की भूमिका

महेश कुमार
निदशक, ब्रिलिएण्ट कोचिंग इस्टीच्युट, जितवारपुर, समस्तीपुर, बिहार, भारत

सारांश
महान विचारक राजा राम मोहन राय ने समाज को सुधारने के लिये अपना पूरा जीवन ही समर्पित कर दिया । उन्होने समाज की तमाम कुरीतियों को खत्म करने के लिये उनका खुल कर विरोध किया था । लेकिन महिलाओं के जीवन को बदलने के लिये उन्होने जो कार्य किये उसके लिये सारा देश हमेशा उनका ऋणी रहेगा । उन्होने महिलाओं को जहां कुरीतियों के मकड़जाल से निकालने में अहम योगदान दिया था वहीं, महिलाओं की स्वतंत्रता के भी पक्षधर थे। सैकड़ों वर्ष पहले बाल विवाह हो या फिर सति प्रथा ये समाज के वो अंग बन गए थे जो कि सिर्फ मनाव नींव को खोखला करने का काम करने में जुटे हुए थे। इन प्रथाओं का सबसे ज्यादा शिकार महिलाएं ही हुई करती थी। इनके खिलाफ उस समय बोलना तो दूर की बात सोचना भी पाप माना जाता था। ऐसी रुढ़िवादी सोच को तोड़ने और समाज को फिर से बनाने का काम महान समाज सुधारक राजा राममोहन रॉय ने किया था। जिन्होंने भारतीय समाज में फैली ऐसी बुराइयों का जमकर विरोध किया। राजाराम मोहन राय ने सती प्रथा के विरोध के साथ–साथ विधवा विवाह के पक्ष में भी अपनी आवाज बुलंद की थी । राम मोहन ने ये कभी भी नहीं सोचा था कि जिस सती प्रथा के विरोध में वो लड़ाई लड़ रहे हैं और जिसे समाज से खत्म करना चाहते है, उस कुरीति की उनकी अपनी भाभी ही शिकार हो जाएंगी।

मूल शब्द: राजाराम मोहन राय, सती प्रथा, विधवा विवाह, कुरीति, समाज एवं महिला

प्रस्तावना
राजा राममोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत और आधुनिक भारत का जनक कहा जाता है। इनके पिता का नाम रमाकांत तथा माता का नाम तारिणी देवी था। भारतीय सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में उनका विशिष्ट स्थान है। वे ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव–जागरण युग के पितामह थे। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और पत्रकारिता के कुशल संयोग से दोनों क्षेत्रों को गति प्रदान की। उनके आन्दोलनों ने जहाँ पत्रकारिता को चमक दी, वहीं उनकी पत्रकारिता ने आन्दोलनों को सही दिशा दिखाने का कार्य किया।

राजा राममोहन राय की दूरदर्शिता और वैचारिकता के सैकड़ों उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। हिन्दी, के प्रति उनका अगाध स्नेह था। वे रूढ़िवाद और कुरीतियों के विरोधी थे लेकिन संस्कार, परंपरा और राष्ट्र गौरव उनके दिल के करीब थे। वे स्वतंत्रता चाहते थे लेकिन चाहते थे कि इस देश के नागरिक उसकी कीमत पहचानें। राजा राममोहन राय का जन्म बंगाल में 1772 में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। १५ वर्ष की आयु तक उन्हें बंगाली, संस्कृत, अरबी तथा फारसी का ज्ञान हो गया था। किशोरावस्था में उन्होने काफी भ्रमण किया।

राममोहन राय ने ईस्ट इंडिया कंपनी की नौकरी छोड़कर अपने आपको राष्ट्र सेवा में झोंक दिया। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के अलावा वे दोहरी लड़ाई लड़ रहे थे। दूसरी लड़ाई उनकी अपने ही देश के नागरिकों से थी। जो अंधविश्वास और कुरीतियों में जकड़े थे। राजा राममोहन राय ने उन्हें झकझोरने का काम किया। बाल–विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, कर्मकांड, पर्दा प्रथा आदि का उन्होंने भरपूर विरोध किया। धर्म प्रचार के क्षेत्र में अलेक्जेंडर डफ्फ ने उनकी काफी सहायता की। देवेंद्र नाथ टैगोर उनके सबसे प्रमुख अनुयायी थे। आधुनिक भारत के निर्माता, सबसे बड़ी सामाजिक – धार्मिक सुधार आंदोलनों के संस्थापक, ब्रह्म समाज, सती प्रणाली जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह भी अंग्रेजी, आधुनिक चिकित्सा प्रौद्योगिकी और विज्ञान के अध्ययन को लोकप्रिय भारतीय समाज में विभिन्न बदलाव की वकालत की।

राजा राम मोहन राय एक महान ऐतिहासिक व्यक्ति थे। जिन्होंने भारत को बदलने के लिए सहरानीय प्रयास किए और पुरानी हिंदू परंपराओं को चुनौती देने की हिम्मत दिखाई। उन्होंने समाज को बदलने के लिए बहुत सारे सामाजिक सुधार किए और भारत में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के भी कई सारे प्रयास किये। वह एक महान विद्वान भी थे। जिन्होंने कई किताबें, धार्मिक और दार्शनिक कार्यों और शास्त्रों को बंगाली में अनुवाद किया और वैदिक ग्रंथों का अनुवाद अंग्रेजी में किया।

उस समय, देश कई सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं से पीड़ित था, जिसने धर्म के नाम पर विवाद पैदा कर रखे थे। उन्होंने ईसाई धर्म और अन्य धर्मों का अध्ययन बड़े पैमाने पर किया। इस अध्यन से, ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए काम करते समय, उन्हें एहसास हुआ कुछ हिंदू परंपराओं और अंधविश्वासों को सुधारने की आवश्यकता है। इसके अलावा, वह धार्मिक विविधता वाले परिवार में पैदा हुए थे, जिसकी वजह से शायद उन्हें अपनी सोच को नियंत्रित करना पड़ा। राय मूर्ति पूजा के खिलाफ थे और उन्होंने ब्रह्म समाज के माध्यम से भगवान की एकता के विचार को प्रचारित किया।

1828 में कोलकाता में वह ब्रह्म समाज के संस्थापक थे। उनके प्रयासों ने वास्तव में वेदांत स्कूल ऑफ फिलास्पी के नैतिक सिद्धांतों की बहाली का नेतृत्व किया। उन्होंने कलकत्ता यूनिटेरियन सोसाइटी की सह–स्थापना भी की।

मुगल सम्राट अकबर द्वितीय ने उन्हें 'राजा' की उपाधि दी। राजा राम मोहन राय इंग्लैंड की यात्रा करने वाले पहले शिक्षित भारतीय थे और वह मुगल सम्राट अकबर द्वितीय के राजदूत के रूप में इंग्लैंड गए थे। राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्ममैनिकल मैग्जीन', 'संवाद कौमुदी', मिरात–उल–अखबार ,(एकेश्वरवाद का उपहार) बंगदूत

जैसे स्तरीय पत्रों का संपादन–प्रकाशन किया। बंगदूत एक अनोखा पत्र था। इसमें बांग्ला, हिन्दी और फारसी भाषा का प्रयोग एक साथ किया जाता था। उनके जुझारू और सशक्त व्यक्तित्व का इस बात से अंदाज लगाया जा सकता है कि सन् 1821 में अँग्रेज जज द्वारा एक भारतीय प्रतापनारायण दास को कोड़े लगाने की सजा दी गई। फलस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। इस बर्बरता के खिलाफ राय ने एक लेख लिखा।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा के क्रम में विभिन्न आचार्यों द्वारा लिखित पुस्तकों का अवलोकन किया गया है जिसमें :

विनोद तिवारी (2005) आधुनिक भारत के निर्माता राजा राम मोहन राय को सबसे अधिक इस बात के लिए जाना जाता है कि उन्होंने ताउम्र महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया और समाज में व्याप्त बुराइयों को नष्ट करने का प्रयास किया. उनके अंदर महिलाओं के लिए एक अलग ही दर्द था जो उन्हें कहीं और से नहीं बल्कि उनके अपने परिवार से ही मिला जहां वह अपनी भाभी को सती होते देख कांप उठे थे.

रवि रंजन,एवं एम. के,सिह;(2012) उन्होंने समाज की कुरीतियों जैसे सती प्रथा, बाल विवाह के खिलाफ खुल कर संघर्ष किया और तब के गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक की मदद से 1929 में सती प्रथा के खिलाफ कानून बनवाया.

एम. के,सिह (2008) राजा राम मोहन राय ने समाज की कुरीतियों जैसे सती प्रथा, बाल विवाह के खिलाफ खुल कर संघर्ष किया। उन्होंने गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक की मदद से सती प्रथा के खिलाफ कानून बनवाया। उन्होंने कहा था कि सती प्रथा का वेदों में कोई स्थान नहीं है। उन्होंने घूम–घूम कर लोगों को उसके खिलाफ जागरूक किया। उन्होंने लोगों की सोच में बदलाव लाने का अथक प्रयास किया। उन्होंने 1814 में आत्मीय सभा का गठन कर समाज में सामाजिक और धार्मिक सुधार शुरू करने का प्रयास किया।

सैयद एम.एच (2011) उन दिनों समाज की कुरीतियों में काफी पिछड़ापन था और संस्कृति के नाम पर लोग अपनी जड़ों की ओर देखते थे, जबकि राजा राम मोहन राय यूरोप के प्रगतिशील एवं आधुनिक विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने इस नब्ज को समझा और जड़ को ध्यान में रखकर वेदांत को नया अर्थ देने की चेष्टा की।

अध्ययन का उद्देश्य

धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन में राजाराम मोहन राय की भूमिका के अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित है :–

इस अध्ययन के आधार पर धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन में राजाराम मोहन राय की भूमिका का तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन पद्धति

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्त्तमान अध्ययन धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन में राजाराम मोहन राय की भूमिका के विविध पक्षों के अन्वेषण से संबंधित है अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत पत्र–पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया है।

समाज सुधार के लिये समर्पित कर दिया जीवन

भारत एक राष्ट्र है और जिसकी अपनी राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्रीय आत्मा समाहित है। इससे सतत् जीवन प्रवाह की स्पन्दनशीलता को युगों–युगों से स्वीकारा गया है। जब जब हमारे देश का राष्ट्रीय पराभव हुआ है और अधर्म की वृद्धि हुई, अनाचार पापाचार का प्राबल्य हुआ है तब तब इस देश में महापुरूषों का अवतरण हुआ है। उन्होंने त्राण दिया है और गहन अंधकार के अमावस से खींच कर प्रकाश पुंज उड़ेला है। गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। (श्रीमद्भगवद्गीता, 4. 7)

मध्ययुगीन भारत में जब मुसलमान शासकों ने भारत में जघन्य अन्याय, मानवता का दमन किया तो भारत में नानक, कबीर, चैतन्य, तुलसी और सूर जैसे महापुरूष अवतरित होकर देश में नवीन चेतना जागृत किये। आधुनिक युग में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के भीषण शोषण, दमन व अत्याचार को राजाराम मोहन राय ने देखा और उन्होंने उस पीड़ा को वाणी दी, उनकी वाणी सामाजिक सुधार के माध्यम से भारत के सामाजिक परिवर्तन की एक मशाल जलाये, भारतीय समाज के घटाटोप अंधेरे को समाप्त करने की दिशा में पहली पहल थी।

भारत एक धर्मप्रधान देश रहा है, धर्म ही इसके प्राण हैं। धार्मिक आंदोलनों ने भारतीय समाज में परिवर्तन और परिष्कार की राजनीतिक पुनर्जागरण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कालान्तर में इस विचारधारा के प्रभाव से भारत देश ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त होकर एक आधुनिक राष्ट्र की आधारशिला के पीछे राजाराममोहन राय के सामाजिक विचार ही रहे हैं। वो बात दूसरी है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का श्रेय कोई और नेता ले जाये पर उस आग को जलाने का कार्य राजा राममोहन राय ने अपने जीवनकाल में ही किया।

राममोहन राय ने अनुभव किया कि हिंदुओं के सामाजिक राजनीतिक ह्रास का प्रमुख कारण उनका धार्मिक व सामाजिक पतन रहा है। राममोहन राय ने सन् 1829 में लिखा ''मुझे यह बात कहते हुए दुःख होता है कि हिन्दुओं की वर्तमान धर्मप्रणाली ऐसी है जिससे कि उनके राजनीतिक हितों की पूर्ति में सहायता नहीं मिल सकती। उनके बीच अगणित विभाजनों तथा उपविभाजनों को जन्म देने वाली जातिप्रथा ने उनको राजनीतिक के नियमों ने उनको किसी भी कठिन और साहसपूर्ण कार्य करने के लिए अयोग्य बना दिया है। मेरे विचार से यह आवश्यक है कि कम से कम उनके सामाजिक तथा राजनीतिक कल्याण के लिए कुछ परिवर्तन होने चाहिए।''

भारतीय संस्कृति और सभ्यता को डूबते हुए देखकर राममोहन राय ने यह महसूस किया कि पतन अपनी चरम सीमा छूने लगा है। उन्होंने भारतीयों को अपने अतीत के वैभव की याद दिलाई और साथ–साथ वर्तमान पतित अवस्था का ज्ञान दर्शन कराकर सामाजिक सुधारों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की दिशा में तेजी से कार्य प्रारंभ किया।

ब्रह्म समाज की स्थापना आधुनिक भारत के राष्ट्रवाद का प्रथम धार्मिक आंदोलन कही जाती है। यथार्थ में भारत में राष्ट्रवाद और प्रजातंत्र का इतिहास ब्रह्म समाज के इतिहास से घनिष्ठ रूप से अंर्तश्रृंखलित है। सन् 1816 आत्मीय सभा की स्थापना कर हिन्दुओं में नये धर्म के मंतव्यों के प्रचार के उद्देश्य से कार्य किया। इसके पीछे मुख्य उद्देश्य हिन्दू समाज में एकजुटता हो। लोगों का ध्यान उस निराकार, निर्विकार एक ब्रह्म की ओर आकृष्ट किया जिसका निरूपण वेदान्त में हुआ। ब्रह्म समाज की मुख्य विशेषता यह थी कि सभी धर्म के प्रति उदारता एवं सहानुभूतिशीलता थी।

राममोहन राय ने महान सुधार सती प्रथा का उन्मूलन करके किया । जनमानस को आंदोलित किया तथा लॉर्ड विलियम वैंटिंक की सरकार से अधिनियम पारित करवा कर भारतीय समाज में एक नवीन युग का सूत्रपात कराया। परम्पराओं का उल्लंघन कर तार्किक ज्ञान का प्रकाश सदैव फैलाया। वे प्रथम हिन्दू थे जिन्होंने समुद्र

पारकर विदेश यात्रा की। नारी मर्यादा और नारियों के प्रति महान् दृष्टिकोण रखने वाले विचारक राममोहन राय ने सती प्रथा को बन्द कराने के साथ –साथ नारियों के साथ अन्य अन्यायों का विरोध किया, मृत पति की सम्पत्ति में अधिकार दिलाया।

राममोहन राय का विचार यह था कि हिन्दू विधवा को सती होने के लिए विवश करने वाली वह परम्परा थी जो कि पति के जायदाद मे उसका हिस्सा नहीं होता था। उन्होंने हिस्सा दिलाने की वकालत की, बहुपत्नी प्रथा के विरूद्ध आवाज उठाई तथा कानून बनवाया, विधवा विवाह, तथा नारियों के उच्च स्थान की वकालत की। जातिप्रथा को वो हिन्दुओं की राजनीतिक कमजोरी मानते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि एक व्यक्ति की श्रेष्ठता अथवा हीनता उसके गुणों पर निर्भर करनी चाहिए न कि जन्म से संयोग पर।

यद्यपि राजा राममोहन राय राजनीतिज्ञ नहीं थे। वे एक महान् समाजसुधारक थे। पर वे यूरोप तथा अंग्रेजों की राजनीति पूरी तरह समझते थे। उन्हें नवभारत का संदेशवाहक कहा जाता है। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने उन्हें भारत में संवैधानिक आंदोलन का जनक कहा है। नागरिक अधिकारों की रक्षा प्रेस संबंधी अध्यादेश के खिलाफ उच्चतम न्यायालय एवं प्रीवी कौंसिल में याचिका दायर की जिसे ''एरियो पंजीटिका'' कहकर पुकारा गया। जूरी बिल 1827 का खिलाफत किया। राम मोहन राय ने वोल्टेयर की भांति मनुष्य को चार भागों में विभक्त किया–जो धोखा देते हैं, जो धोखा खाते हैं, जो धोखा देते हैं और धोखा खाते हैं और जो न धोखा देते हैं, जो धोखा खाते है, जो धोखा देते हैं और धोखा खाते हैं और जो न धोखा देते और न तो धोखा खाते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में अंधविश्वास तथा उसके व्यापकता के कारणों का जो विश्लेषण किया उससे प्रतीत होता है कि उन पर लॉक तथा ह्यूम का प्रभाव था, क्योंकि अपने विश्लेषण में उन्होंने ऐतिहासिक तत्वों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक तत्वों को अधिक महत्व दिया है।

राममोहन राय ने कंपनी की सेवाओं में भारतीय नागरिकों को अधिक स्थान देने की मांग की तथा यह भी मांग किया कि जमींदारों को अपने किसानों पर लगान बढ़ाने का अधिकार नहीं होना चाहिए जबकि राजाराममोहन राय स्वयं एक जमींदार थे। इससे स्पष्ट होता है कि उनके विचार में भारतीय समाज को परिवर्तित कर उसे एक नई रोशनी देना समाहित था। उनके इस तरह के विचारों ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में उत्प्रेरक का कार्य किया है।

महान विचारक राजा राम मोहन राय ने समाज को सुधारने के लिये अपना पूरा जीवन ही समर्पित कर दिया। उन्होने समाज की तमाम कुरीतियों को खत्म करने के लिये उनका खुल कर विरोध किया था। लेकिन महिलाओं के जीवन को बदलने के लिये उन्होने जो कार्य किये उसके लिये सारा देश हमेशा उनका ऋणी रहेगा। उन्होने महिलाओं को जहां कुरीतियों के मकड़जाल से निकालने में अहम योगदान दिया था वहीं, महिलाओं की स्वतंत्रता के भी पक्षधर थे।

सैकड़ों वर्ष पहले बाल विवाह हो या फिर सति प्रथा ये समाज के वो अंग बन गए थे जो कि सिर्फ मनाव नींव को खोखला करने का काम करने में जुटे हुए थे। इन प्रथाओं का सबसे ज्यादा शिकार महिलाएं ही हुई करती थी। इनके खिलाफ उस समय बोलना तो दूर की बात सोचना भी पाप माना जाता था। ऐसी रुढ़िवादी सोच को तोड़ने और समाज को फिर से बनाने का काम महान समाज सुधारक राजा राममोहन रॉय ने किया था। जिन्होंने भारतीय समाज में फैली ऐसी बुराइयों का जमकर विरोध किया। राजाराम मोहन राय ने सती प्रथा के विरोध के साथ–साथ विधवा विवाह के पक्ष में भी अपनी आवाज बुलंद की थी। राम मोहन ने ये कभी भी नहीं सोचा था कि जिस सती प्रथा के विरोध में वो लड़ाई लड़ रहे हैं और जिसे समाज से खत्म करना चाहते है, उस कुरीति की उनकी अपनी भाभी ही शिकार हो जाएंगी। दरअसल राजा राम मोहन राय किसी कार्यवश विदेश गए थे, इसी दौरान उनके भाई का देहांत हो गया। जिसके बाद समाज के ठेकेदारों ने उनकी भाभी को सती प्रथा के नाम पर जिंदा जला दिया। वहीं एक अन्य घटना में उनकी पत्नी की बहन को भी सती कर दिया गया था, जिसे देख कर वो काफी विचलित हो गये थे। जिसके बाद महिलाओं के प्रति उनकी संवेदनाएं जग गयीं थ । भाभी की मृत्यु के बाद उन्होने निश्चय कर लिया था कि अब किसी भी महिला के साथ वो ऐसा नहीं होने देंगे। जिसके बाद उन्होने लंबी लड़ाई लड़ने के बाद इस कुरीति को, गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बेंटिक की मदद से साल 1929 में सती प्रथा के खिलाफ कानून बनवाया और खत्म किया । वो महिलाओं को शिक्षित करने के भी पक्षधर थे, इसीलिए उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्र रूप से सोचने और अपने अधिकारों के लिये आगे आने के लिये प्रेरित किया था। उन्होंने कहा था कि बालिकाओ को भी बालको के समान ही अधिकार मिलने चाहिये। इसके लिये उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भी मौजूदा कानून में बदलाव लाने के लिये कहा था।

राजा राम मोहन राय हमेशा याद किये जाएंगे, उन्होने निस्वार्थ भावना से देश और समाज के विषय में सोचा और जीवन भर समाज की कुरीतियों को खत्म करने के लिये संघर्ष भी किया। आज खुली हवा में महिलाएं अगर सास ले रहीं हैं तो इसमें राजा राम मोहन राय के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। समाज के बुरे रीति–रिवाजों और कुप्रथाओं के नीचे दबा हुआ था। यहाँ पर जटिल अनुष्ठानों और विनम्र नैतिक संहिता का एक बड़ा प्रसार था, जिसमें बुरी प्राचीन परंपराओं को स्पष्ट रूप से समझा गया और बड़े पैमाने पर इसमें संशोधन भी किया गया था। राय परंपरागत हिंदू प्रथाओं के खिलाफ थे और उन्होंने सती प्रथा, बहुपत्नी, जाति कठोरता और बाल विवाह के खिलाफ आवाज उठाई। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि "सती प्रथा" को बंद करवाना था। यह एक ऐसी प्रथा थी जिसमें एक विधवा को अपने मृत पति के अंतिम संस्कार में खुद के शरीर को भी पति के साथ चिता पर बैठकर नष्ट करना पड़ता था। कानूनी रूप से इस प्रथा पर रोक लगाने के प्रसंग में उनको वर्षों तक संघर्ष करना पड़ा। एक बेहद प्रभावशाली सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन था जिसने जाति व्यवस्था, दहेज, महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचार आदि जैसी बुराइयों के खिलाफ अपनी आवाज उठाई।

शैक्षणिक योगदान

उन्होंने भारत की शिक्षा प्रणाली में उल्लेखनीय प्रयास किए। शिक्षा प्रणाली में आधुनिकीकरण लाने के लिए, राजा राम मोहन राय ने कई अंग्रेजी स्कूलों की स्थापना की। उन्होंने 1817 ई0 में कलकत्ता में एक हिंदू महाविद्यालय की स्थापना करके, भारत की शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी बदलाव किया, जो देश के सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक संस्थानों में से एक बन गया। राय ने आग्रह किया कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, पश्चिमी चिकित्सा और अंग्रेजी भारतीय स्कूलों में पढ़ाया जाना चाहिए। उन्होंने प्रौद्योगिकी, पश्चिमी चिकित्सा और अंग्रेजी को बढ़ावा देने के लिए भारतीय स्कूलों में इनका अध्यन शुरू करवाया।

राम मोहन राय केवल एक महान शिक्षाविद् ही नहीं थे, बल्कि महान विचारक और समाज सुधारक भी थे। जब देश में केवल भाषा और संस्कृति को ही बढ़ावा दिया जाता था, उस वक्त राजाराम ने राय अंग्रेजी, विज्ञान, पाश्चात्य और तकनीकी ज्ञान को ग्रहण करने के पक्षधर रहे। लोगों को राजनीतिक रूप से शिक्षित करने के लिए, राजा राम मोहन राय ने अंग्रेजी, हिंदी, फारसी और बंगाली सहित विभिन्न भाषाओं में पत्रिकाएँ भी प्रकाशित कीं। उनके द्वारा प्रकाशित उल्लेखनीय पत्रिकाएँ ब्राह्मणिकी पत्रिका, सम्वाद कौमुद्दी और मिरात–उल–अकबर थीं। उनकी सबसे लोकप्रिय पत्रिकाओं में भारत में सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों को शामिल किया गया, जिसने भारतीयों को अपने वर्तमान अवस्था से ऊपर उठने में मदद की। उन दिनों समाचार और लेख को प्रकाशित किए जाने से पहले सरकार की अनुमति लेनी जरूरी थी। राजा राम मोहन इस विचार

के खिलाफ थे और उन्होंने इसका विरोध इस तर्क के आधार पर किया कि समाचार पत्र को सत्य को प्रतिबिंबित किया जाता है और सच्चाई को इस आधार पर दबाया नहीं जाना चाहिए। सरकार इसे पसंद नहीं कर रही है।

निष्कर्ष

राजा राम मोहन राय की 27 सितंबर 1833 को ब्रिस्टल में दिमागी बुखार के कारण मृत्यु हो गई थी। ब्रिटिश सरकार ने राजा राम मोहन की याद में एक सड़क का नाम ब्रिस्टल रख दिया।

भारतीयों द्वारा कई क्षेत्रों में बहुत सारी प्रगति की जा रही है, लेकिन महिलाओं की स्थिति अभी भी इस प्रगति के पीछे है। समाज से सभी प्रकार की बुराइयों को दूर करने के लिए राजा राम मोहन राय जैसे समाज सुधारक को भारत में फिर से जन्म लेने की जरूरत है। राजा राममोहन राय को आधुनिक भारत और बंगाल के नवयुग का जनक कहा जाता हैं । उन्होंने हिन्दू परम्पराओं का विरोध करते हुए महिलाओं और समाज की बेहतरी के लिये कई कई सामाजिक कार्य किए । हालांकि उनकी पहचान देश में सती प्रथा के विरोध करने वाले पहले व्यक्ति के तौर दर्ज है । लेकिन इसके अलावा भी कई ऐसे कार्य रहे जिनके लिये उन्हे याद किया जाता है ।

संदर्भ सूची

1. विनोद तिवारी (2005)राजा राममोहन राय, मनोज पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 32–35.
2. रवि रंजन,एवं एम. के,सिह; (2012) राममोहन राय, के. के. पब्लिकेशन , नई दिल्ली, पृ0 28–31.
3. एम. के,सिह (2008) राजा राममोहन राय, अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 51–53.
4. सैयद एम.एच (2011) राजा राममोहन राय , हिमालय पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, पृ0 34–36.